वार्षिक पत्रिका का २०वाँ अंक, वर्ष २०२५

संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय)

मंगळूरु–५७५००३, भारत

ESTD 1880

प्रेरणा–२०२५

हिंदी प्राध्यापक : डॉ. मुकुंद प्रभु, डॉ. महबूबअलि अ. नदाफ, डॉ. संध्या यू. सिर्सिकर, सुश्री. रॉयसी रेखा ब्रग्गस, श्रीमती. शैला डिसोज़ा, सुश्री. लीलू कुमारी रजक और डॉ. गोविंद थापा क्षेत्री।

हिंदी संघ के सचिव : अरमान और आएशा निहाला।

हिंदी प्राध्यापक तथा हिंदी संघ के सदस्य

गत वर्ष (२०२३–२४) के सचिव: शनिफ़ अबुबकर और नश्वाह

संपादकीय

वार्षिक हिंदी पत्रिका 'प्रेरणा' का 20वाँ अंक आपके हाथ में है। 'प्रेरणा' पत्रिका में हिंदी विभाग के कक्षा लेखन कार्य तथा लेखन में रुचि रखनेवाले छात्रों के लेख प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें छात्रों ने अपनी लेखनी से समाज, संस्कृति, शिक्षा और मानवता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने विचारों को कविता, लेख, चुटकुले के माध्यम से प्रकट किया है और अपने अनुभवों तथा कल्पनाओं को कागज पर उकेरा है।

संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय) के हिंदी विभाग में पाठ्यक्रम के साथ–साथ हिंदी संघ के सहयोग से सह–पाठ्यक्रम के रूप में अतिथि व्याख्यान, कार्यशाला, वेबिनार, विचार गोष्ठी, प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के साथ अकादमिक वर्षांत में अंतर महाविद्यालयी हिंदी उत्सव 'प्रेरणा' का आयोजन किया जाता है। इसमें दूसरे महाविद्यालयों के छात्र बडे उत्साह से खुशी के साथ भाग लेते हैं।

प्रेरणा पत्रिका–2025 को समृद्ध करनेवाले भावी रचनाकारों को और प्रकाशन कार्य में सहयोग देनेवाले सभी प्राध्यापक बंधुओं को मैं तहे दिल से अभिनंदन करता हूँ। आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि आपके सहयोग से ही हम इस पत्रिका को और अधिक सृजनात्मक और उपयोगी बना सकते हैं। प्रेरणा पत्रिका को सुंदर से सजाकर मुद्रित करनेवाले आसीसि प्रेस को धन्यवाद देता हूँ।

फरवरी, 2025

मंगळूरु

डॉ. महबूबअलि अ. नदाफ
सह प्राध्यापक

कुलपति का संदेश

संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय) के हिंदी विभाग ने शैक्षणिक और अन्य सभी सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में उत्कृष्टता दिखाई है। पत्रिका को दिए गए 'प्रेरणा' नाम की तरह, छात्र इससे प्रेरणा लेते हैं और शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में आयोजित अपनी सभी गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं। 'प्रेरणा' उनकी प्रतिभा, उनकी आंतरिक आकांक्षाओं और दूरदर्शिता को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से छात्र अपनी गहरी इच्छा और लालसाओं को संप्रेषित करते हैं।

हम एक उपभोक्तावादी और डिजिटल दुनिया में हैं, जो हमारी परंपराओं और लंबे समय से पोषित संस्कृति के लिए एक चुनौती है। हमें अपनी संस्कृति से गहराई से जुड़े रहने की जरूरत है। किसी विशेष संस्कृति को पोषित करने में भाषा की प्रमुख भूमिका होती है। इस वर्तमान परिदृश्य में हमारे हिंदी छात्र 'प्रेरणा' के माध्यम से अपने विचारों और आंतरिक लालसाओं को अभिव्यक्ति दे रहे हैं। हिंदी संकाय के सदस्य छात्रों को पढ़ने और लेखन के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हमारे कई छात्र अच्छा साहित्य पढ़ना तो दूर, दैनिक समाचार पत्र भी नहीं देखते। इन आदतों को विकसित करना होगा और रुचि पैदा करनी होगी। अच्छे साहित्य के निर्माण के लिए रचनात्मकता और कल्पनाशीलता की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को पढ़ने का आनंद लेना होगा और फिर रचनात्मक लेखन के माध्यम से अपने विचारों को सामने रखना होगा। 'प्रेरणा' जैसी पत्रिका का यही उद्देश्य है। मैं छात्रों और हिंदी विभाग के शिक्षकों को उनकी रचनात्मक और जीवंत प्रस्तुति के लिए बधाई देता हूँ।

रे. डॉ. प्रवीण मार्टिस एस् जे
कुलपति

विभागाध्यक्ष का संदेश

आज जनसंचार माधमों की दिनदूनी रात चौगुणी रफ्तार से बढ़ने वाले प्रभाव के कारण पुस्तक पढ़नेवालों की संख्य़ा घटती जा रही है। लंबे–लंबे आलेख या विचारों को पढ़ने की या मन करने की क्षमता भी लोगों के पास नहीं है। तो अब सवाल उठता है कि क्या साहित्य सर्जना का काम ठप पड़ जाएगा? बिलकुल नहीं क्योंकि भारतीय जनमानस पुस्तकों को ज्ञान की अधिदेवता सरस्वती मानते हैं। भारतीय सभ्यता में लिखित रूप का ज्ञान बहुत पुराने जमाने से चला आ रहा है। इसी प्रकार श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ पढ़नेवाला एक पाठक वर्ग भी हमेशा मौजूद रहेगा।

अनेक सालों से संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय) का हिन्दी विभाग 'प्रेरणा' अंतर कालेज उत्सव एवं 'प्रेरणा' वार्षिक पत्रिका को विमोचन करते आया है। उसी प्रकार इस बार भी विद्यार्थियों की प्रतिभा उजागर करने के लिए 'प्रेरणा' पत्रिका का विमोचन किया जा रहा है। इसमें हमारे विद्यार्थियों की रचनाएँ लिपिबद्ध हुई हैं। अपनी कारयत्रि एवं धारयत्रि प्रतिभा के द्वारा विद्यार्थियों ने कुछ लेख, कविताएँ एवं चुटकुलों की रचना की है, जिसे पढ़कर आप विद्वज्जनों को उन्हें प्रोत्साहित करना है। आगे जाकर यहीं प्रतिभाएँ राज्य, देश या विदोशों में भी अपना नाम रोशन कर सकते हैं।

इस पत्रिका के संपादक डॉ. महबूबअली अ नदाफ जी के एवं वियार्थियों के अथक प्रयास के कारण यह कार्य संभव हो पाया है। मैं विभागाध्यक्ष के नाते उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। विभाग के अन्य सभी अध्यापक एवं विद्यार्थियों को भी शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. मुकुंद प्रभु
विभागाध्यक्ष

हिंदी संघ के अध्यक्ष का संदेश

प्रेरणा है एक नई उड़ान,
छात्रों के सपनों की पहचान।
लेख, कविताएँ, सृजन अनोखे,
नव विचार के जगे झरोखे।

रचनात्मकता का रंग जमाएं,
नव लेखन की जोत जलाएं।
ज्ञान–सागर में गोता लगाकर,
नई दिशा की ओर बढ़ाएं।

हिंदी का दीप जले सदा,
ज्ञान की गंगा बहे सदा।

प्रिय पाठकों,

हिंदी भाषा केवल एक संचार का माध्यम नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और पहचान का प्रतीक भी है। इसका अध्ययन न केवल भाषायी समृद्धि प्रदान करता है, बल्कि यह हमारी सोच को नवीनता, रचनात्मकता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण करता है।

संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय) में हिंदी भाषा के प्रति छात्रों की रुचि और उनकी बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि हिंदी का महत्व सतत् बना हुआ है। विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रेरणा' छात्रों की लेखन क्षमता, सृजनात्मकता और बौद्धिक विकास को एक सशक्त मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं, कविता, लेख एवं अन्य रचनाओं के द्वारा अपनी सृजनशीलता को नया आयाम देते हैं।

हिंदी विभाग का यह प्रयास निरंतर रहेगा कि छात्र भाषा के ज्ञान को केवल अकादमिक दायरे तक सीमित न रखें, बल्कि उसे व्यावहारिक जीवन में भी आत्मसात करें। मैं सभी विद्यार्थियों को इस पत्रिका में अपने लेखन कौशल को निखारने के लिए प्रेरित करता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. गोविंद थापा क्षेत्री
अध्यक्ष, हिंदी संघ

हिंदी संघ के अध्यक्ष का संदेश

विश्व की विभिन्न भाषाओं में हिंदी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में इसकी गणना की जाती है। हिंदी भाषा निरंतर गति से आधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी प्रासंगि-कता और उपयोगिता को सिद्ध करती जा रही है, जिससे उसके भविष्य के विकास के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। बाजार में भी हिंदी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है और विश्व के विविध क्षेत्रों में हिंदी ने अपनी सम्मानजनक छवि को प्रतिष्ठित किया है, जो उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा को भी प्रदर्शित करती है। फिर भी हिंदी के उत्थान के मार्ग को सुगम बनाने के लिए हमें अपनी जागरूकता में वृद्धि करनी होगी और इसके साथ ही हमें अपने प्रयासों में और अधिक निष्ठा व दृढ़ता का परिचय देना होगा। बीते वर्ष 2024 और 2025 की शुरुआत में संत अलोशियस, हिंदी विभाग के लगभग तीन से चार सहायक आचार्यों को कार्यभार में कमी के कारण अपना पद छोड़ना पड़ा, जो हिंदी विभाग के भविष्य के लिए एक गंभीर व चिंताजनक स्थिति को दर्शाता है। यह घटना हिंदी विभाग की स्थिरता और सुरक्षा को लेकर गहरी चिंता को जन्म देती है। विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के बावजूद, भाषा में रोजगार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कुछ नवीन व प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है। यह न केवल हिंदी के लिए, बल्कि विभिन्न भाषाओं में रोजगार की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है। जैसा कि विश्वविद्यालय, कर्नाटक राज्य की एक प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्था होने के नाते, इस दिशा में एक मार्गदर्शक भूमिका निभा सकती है। विश्वविद्यालय द्वारा कुछ ठोस और सार्थक कदम उठाने से न केवल हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि अन्य संस्थाओं के लिए भी एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया जा सकेगा।

बहरहाल, अब आती हूँ विभाग के हिंदी संघ और उसकी पत्रिका पर, जैसा कि हिंदी विभाग के अंतर्गत संचालित हिंदी संघ एक महत्वपूर्ण समूह है, जो हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति छात्रों की रुचि को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। हिंदी विभाग और हिंदी संघ द्वारा पिछले दो दशकों से निरंतर 'प्रेरणा' पत्रिका का संपादन और अंतर-महाविद्यालय हिंदी उत्सव के साथ-साथ अनेक अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें कर्नाटक के विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों को एक मंच प्रदान किया जाता है। इससे कर्नाटक के विभिन्न जिलों में हिंदी के प्रति एक गहरी आत्मीयता और समर्पण की भावना उत्पन्न हुई है, जिससे हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति लोगों की रुचि और जुड़ाव में वृद्धि हुई है। यहाँ अध्ययनरत छात्र हिंदी से गहराई से जुड़े हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवनशैली और संस्कार को भी हिंदी के साथ अंतरंग रूप से जोड़ा है, जो 'प्रेरणा' पत्रिका के रूप में प्रकट हुआ है। यह पत्रिका इस आत्मीयता और समर्पण का एक साक्षात प्रतीक है।

हमें पूर्ण विश्वास और आशा है कि यह अंक न केवल पिछले अंकों की तरह हिंदी के आत्म-साक्षात्कार का एक अवसर प्रदान करेगा, बल्कि यह हमें हिंदी की योग्यता, महत्व के प्रति एक नई दृष्टि और सम्मान की भावना से भी परिचित कराएगा। कर्नाटक में यह पत्रिका न केवल हिंदी की प्रगति का एक साक्ष्य है, बल्कि यह यहाँ हिंदी के विकास में एक आवश्यक प्रयास भी है। जय हिंद! जय हिंदी!

सुश्री. लीलू कुमारी रजक
अध्यक्ष, हिंदी संघ

हिंदी संघ के अध्यक्ष का संदेश

'हिंदी हमारी संस्कृति और परंपरा की धारा है, और हमें इसकी महत्ता को कभी नहीं भूलना चाहिए।'– सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रभाषा है, और यह हमारी संस्कृति और परंपरा की धारा है। इस भाषा ने हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखा है और हमें अपनी पहचान दिलाई है।

हिंदी भाषा की महत्ता को हम कभी नहीं भूल सकते। यह भाषा हमें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम देती है। यह भाषा हमें अपनी संस्कृति और परंपरा को समझने और संरक्षित करने में मदद करती है।

प्रेरणा पत्रिका एक ऐसा मंच है, जो हमें प्रेरित करता है और हमें नई दिशा देता है। इस पत्रिका ने हमें कई प्रेरणादायक कहानियाँ और लेख दिए हैं, जो हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रेरणा पत्रिका की महत्ता को हम कभी नहीं भूल सकते। यह पत्रिका हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह पत्रिका हमें अपनी संस्कृति और परंपरा को संरक्षित रखने और उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है।

श्रीमती. शैला डिसोज़ा
अध्यक्ष, हिंदी संघ

हिंदी भाषा और संस्कृति का उत्सव

'प्रेरणा' हिंदी महोत्सव का उद्देश्य छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और उत्साह जगाना है। यह उत्सव न केवल भाषा को प्रोत्साहित करने का माध्यम है, बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी मंच है।

इस महोत्सव में वाद-विवाद, कविता पाठ, कहानी लेखन, निबंध प्रतियोगिता, नाटक आदि विविध गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जो छात्रों को हिंदी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति को निखारने का अवसर देती हैं। इससे न केवल उनकी भाषा पर पकड़ मजबूत होती है, बल्कि आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

'प्रेरणा' हिंदी भाषा और इसकी समृद्ध साहित्यिक विरासत से छात्रों को जोड़ने का प्रयास करता है। यह कार्यक्रम हिंदी को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बनाए रखने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होता है। छात्रों के लिए यह उत्सव न केवल सीखने का माध्यम है, बल्कि हिंदी के प्रति गौरव और प्रेरणा का स्रोत भी बनता है।

डॉ. संध्या यू. सिर्सिकर
सहायक प्राध्यापिका

हिंदी प्राध्यापिका का संदेश

'हिंदी वह धागा है जो भारत की विविधता को एकता में पिरोता है।'

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का प्रतीक है। यह देश की भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है, जो हमें एकता के सूत्र में बांधती है। हिंदी का प्रचार और संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसकी मिठास और महत्व को महसूस कर सकें।

'प्रेरणा' पत्रिका के इस विशेष अंक के लिए अपने विचार व्यक्त करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। 'प्रेरणा' पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, विचारशीलता और लेखन कौशल को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त मंच है। शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आपके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास, मानवीय मूल्यों, और सृजनात्मक सोच को भी प्रोत्साहित करता है। लेखन, कविता, कला, और विचार–विमर्श जैसे रचनात्मक प्रयास आपकी आंतरिक अभिव्यक्ति को निखारते हैं और आपको एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करते हैं। लेखन केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि भावनाओं, अनुभवों और विचारों को आकार देने की कला है। यह आत्म–अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम है, जो हमारी कल्पनाशक्ति को विस्तार देता है और हमारी सोच को दिशा प्रदान करता है। एक सशक्त लेखनी समाज में बदलाव ला सकती है, विचारों को प्रेरित कर सकती है और नए दृष्टिकोण को जन्म दे सकती है। लिखना केवल साहित्यकारों तक सीमित नहीं है; यह हर उस व्यक्ति के लिए है जो अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। इसलिए, अपनी कल्पना को उड़ान दें, अपने विचारों को शब्दों में पिरोएँ और निडर होकर अपनी लेखनी को नया आयाम दें।

अंत में, मैं इस पत्रिका की संपादकीय समिति और इसमें योगदान देने वाले सभी छात्रों को उनकी मेहनत और प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

सुश्री. रॉयसी रेखा ब्रग्गस
सहायक प्राध्यापिका

हिंदी संघ के सचिव का संदेश

संत अलोशियस (मानित विश्वविद्यालय), जो मंगळूरु में स्थित है, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविध–ता और शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रेरणा पत्रिका छात्रों को अपनी साहित्यिक और कलात्मक प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का एक मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका छात्रों को हिंदी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर देती है। हमारा विश्वविद्यालय बहुसांस्कृतिक वातावरण को दर्शाता है।

हिंदी संघ विश्वविद्यालय में एक छात्र संगठन को संदर्भित करता है जो हिंदी भाषा और संस्कृति के उपयोग और सराहना को बढ़ावा देता है। हिंदी संघ हिंदी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, चर्चाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। पत्रिका का लक्ष्य छात्रों को हिंदी भाषा और उसके धरोहर से जोड़ना है।

दक्षिण भारत में हिंदी के संदर्भ में, जबकि यह क्षेत्र की मूल भाषा नहीं है, फिर भी इसे स्कूलों और कॉलेजों में व्यापक रूप से पढ़ाया जाता है, खासकर पाठ्यक्रम का हिस्सा के रूप में। दक्षिण भारत में कई संस्थान, हमारा विश्वविद्यालय, हिंदी को एक विषय के रूप में पेश करते हैं। यह इसके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में महत्व को स्वीकार करते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले छात्रों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि वे देश की व्यापक संस्कृति और भाषा से जुड़ सकें। दक्षिण भारत में हिंदी का उपयोग देश के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों वाले लोगों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है।

अरमान
सचिव, हिंदी संघ

कर्नाटक के हथकरघा : एक परिचय

कर्नाटक हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना वर्ष 1994 में की गई थी। कर्नाटक रेशम और पारंपरिक बुनाई के लिए जाना जाता है। देश में मलबरी रेशम का सबसे बडा उत्पादक कर्नाटक राज्य है, जिसकी हिस्सेदारी लगभग 65% है।

1. इळकल साड़ी : इळकल साड़ी भारत के महिलाओं का आम पहनावा है। इळकल साडी का नाम भारत के कर्नाटक राज्य के बागलकोट जिले के इळकल शहर से लिया गया है। इळकल एक

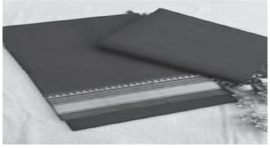

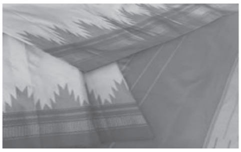

प्राचीन बुनाई केंद्र था जहाँ बुनाई आठवीं शताब्दी में शुरू हुई थी। इळकल साडियों को शरीर पर सूती ताने और बॉर्डर के लिए आर्ट सिल्क ताना और साडी के पल्लू के हिस्से के लिए भी आर्ट सिल्क ताना का उपयोग करके बुना जाता है।

2. मैसूर रेशम : कर्नाटक में रेशम मुख्य रूप से मैसूर जिले में उत्पादन होता हैं। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद मैसूर क्षेत्र में रेशम

उद्योग गिरावट में चला गया। मैसूर साम्राज्य में रेशम का विकास टीपू सुल्तान के शासनकाल के दौरान फिर से शुरू हुआ। शुरुआत में रेशम के कपडे शाही परिवार की जरूरतों के लिए बनाए जाते थे। आज उत्पादों में रेशम की साडियाँ, शर्ट, कुर्ते, रेशम की धोती और नेकटाई शामिल हैं।

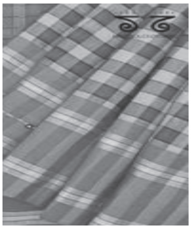

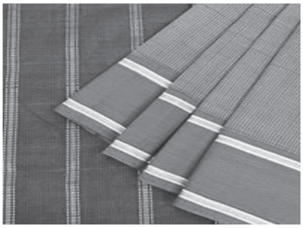

3. उडुपी साड़ी : उडुपी साड़ी, उडुपी और दक्षिण कन्नड़ ज़िले में शुरू हुई थी। इन साडियों की खूबसूरती न केवल इसकी बेहतरीन टेपेस्ट्री में है, बल्कि इस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और परंपरा में निहित होने में भी हैं। उडुपी साडी को मग्गा साड़ी के रूप में भी जाना जाता है। उडुपी साडी को कॉटन यार्न का उपयोग करके बुना जाता है। साडी के मुख्य भाग में सादा या चेकर्ड डिजाइन है। उडुपी साडी के शरीर के लिए हल्के रंगों का उपयोग किया जाता है, जबकी बॉर्डर और पल्लू के लिए चमकीले और विपरीत रंगों का उपयोग किया जाता है।

4. कसूती साड़ी : कसूती सडी भारत के कर्नाटक राज्य में प्रचलित लोक कढाई का एक पारंपरिक रूप है। कसूती का इतिहास चालुक्य काल से

मिलता है। कसूती कढ़ाई, कर्नाटक के रंगोली पैर्टन से प्रभावित लोक डिजाइन हैं। कसूती के लिए स्थानीय रूप से उपलब्द सामाग्री का उपयोग किया जाता है। यह काम श्रमसाध्य है और इसमें कपडे पर प्रत्येक धागे की गिनती शामिल है। इसमें कभी–कभी हाथ से 5000 टांके लगाने पड़ते हैं।

निधी जयकुमार
बी.एस्सी द्वितीय
हाजराती संख्या : 2329114

दुनिया मेरे नजरिये से

दूनिया मेरे नजरिये से देखो,
तो भगवान की अनुपम देन है।

सुरीली ये नदियाँ बहती,
पृथ्वी की हरियाली पेड़ों से बढ़ती है,
नभ में घने बादल,
सितारे आसमान में चमके,
सूरज का प्रकाश सारे जग में फैलाए,
दिन ढलते ही रात आती है,
ऐसा लगता है,
जैसे अंधकार में खो गई हूँ,
हर अंधेरा हमें यह सिखा कर जाता है,
जैसे सवेरा आता है,
नया दिन साथ लाता है,
यह सुनहरी रश्मि,
उजाला फिर से लाती है।

यह कह कर चमकती है कि,
समस्या तो है सबके साथ,
बस हमारे नजरिए की है बात,
यह है दुनिया मेरे नजरिये से।

जान्वी प्रशांत कोव्यान
बी.कॉम प्रथम
हाजराती संख्या : 24130932

पहेलियाँ

1) मेरी कोई आवाज नहीं, लेकिन मैं तुमसे बात कर सकता हूँ।
मेरी कोई जिंदगी नहीं, लेकिन मैं तुम्हारी जिंदगी को बदल सकता हूँ।
मेरी कोई आँखें नहीं, लेकिन मैं तुम्हें दुनिया दिखा सकता हूँ।
मैं क्या हूँ?
उत्तर– एक पुस्तक।

2) गोल है पर गेंद नहीं, पूंछ है पर पशु नहीं, पूंछ पकड़कर खेलें बच्चे, फिर भी मेरे आँसू न निकले।
उत्तरः गुब्बारा।

3) चौकी पर बैठी एक रानी, सिर पर आग बदन में पानी।
उत्तरः मोमबत्ती

4) मेरा भाई बड़ा शैतान, बैठे नाक पर, पकड़े कान?
उत्तरः चश्मा

एनी पर्ल
बी.एस्सी प्रथम
हाजराती संख्या : 24126410

कुछ कर दिखाने कि शक्ति

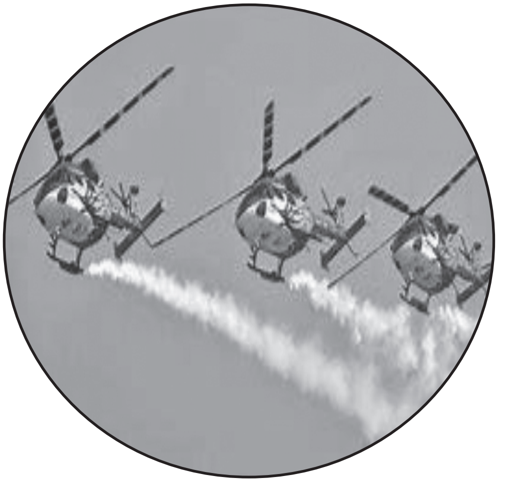

वक्त तुम्हारा है,
सपना भी तुम्हारा है।
पुरे भी तुमको करना है,
और साथी उन दुनिया वालो को कुछ कर दिखाना है।

इसलिए मुश्किलों से तुझे लड़ना है,
जीत को हासिल करना है।
क्या हुआ अगर तू अकेला है,
फिर भी तू मुश्किलों का विजेता है।

तू जलता हुआ रेगिस्तान है,
तेरे अंदर कुछ करने की ठान है।
तू रुक मत तुझे करना कुछ महान है,
तुझे इतिहास को पलटना है।

अपने मंजिल को पूरा तुझे करना है,
तो चाँद बनके रात में जाग।
अपने मंजिल को अर्जुन–सा निशान बना,
और वो लक्ष्य की ओर भाग।

गौतमी के.
बी.एस्सी प्रथम
हाजराती संख्या : 24126209

माँ

माँ तेरी ममता का कोई मोल नहीं,
तेरे बिना ये जीवन अनमोल नहीं।
तेरी गोद ही मेरी पहली जन्नत थी,
तेरे आंचल की छाँव ही सबसे निर्मल थी।

तेरी लोरी में था प्यार का संगीत,
तेरी बातों में छुपा था स्नेह अतीत।
तेरी हथेली का स्पर्श था दुआओं सा,
तेरी आँखों में बसा आसमां हुआ सा।

सर्दी में तू कम्बल बन जाती,
गर्मी में छाँव की तरह ठंडक लाती।
भूख में खुद को भूला देती,
दुख में मुझसे पहले रो देती।

माँ, तेरा प्यार अनंत है,
हर दर्द की दवा, हर उलझन का अंत है।
तू है तो रोशनी है,
वरना ये जीवन बस एक कहानी है।

खुशबू चौधरी
बी.ए. प्रथम
हाजराती संख्या : 24110411

राष्ट्रीय कैडेट कोर का महत्व

राष्ट्रीय कैडेट कोर अर्थात् राष्ट्रीय छात्र–सेना का महत्व भारत में बहुत अधिक है। यह एक संगठन है, जो छात्रों को अनुशासन, नेतृत्व, और सामूहिक जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाता है। इसके माध्यम से युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाया जाता है। एन्सीसी का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है :

अनुशासन और समर्पण : एन्सीसी में भाग लेने वाले छात्रों में अनुशासन, समय प्रबंधन और समर्पण की भावना उत्पन्न होती है।

नेतृत्व कौशल : एन्सीसी युवाओं को नेतृत्व की कला सिखाता है। यह उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जागरूक बनाता है और टीम के साथ मिलकर कार्य करने की क्षमता विकसित करता है।

राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा : एन्सीसी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है और छात्रों को देश की सुरक्षा से जुड़ी जिम्मेदारियों का अहसास कराता है। यह युवा पीढ़ी को भारतीय सेना और अन्य बलों के कार्यों से परिचित कराता है।

शारीरिक और मानसिक विकास : एन्सीसी के कार्यक्रमों में शारीरिक प्रशिक्षण, साहसिक गतिविधियाँ, और सामाजिक कार्य शामिल होते हैं, जो व्यक्तित्व के समग्र विकास में मदद करते हैं।

स्वयंसेवा और समाज सेवा : एन्सीसी में विद्यार्थियों को समाज सेवा के अवसर मिलते हैं, जैसे कि पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान और आपदा राहत कार्यों में भाग लेना।

कैडेट को अवसर : एन्सीसी के अच्छे कैडेट्स को विभिन्न सरकारी संस्थाओं में विशेष अवसर मिलते हैं, जैसे कि उन्हें सेना में भर्ती के लिए प्राथमिकता दी जाती है।

अधिक शेट्टी
बीसीए द्वितीय
हाजराती संख्या : 2353014

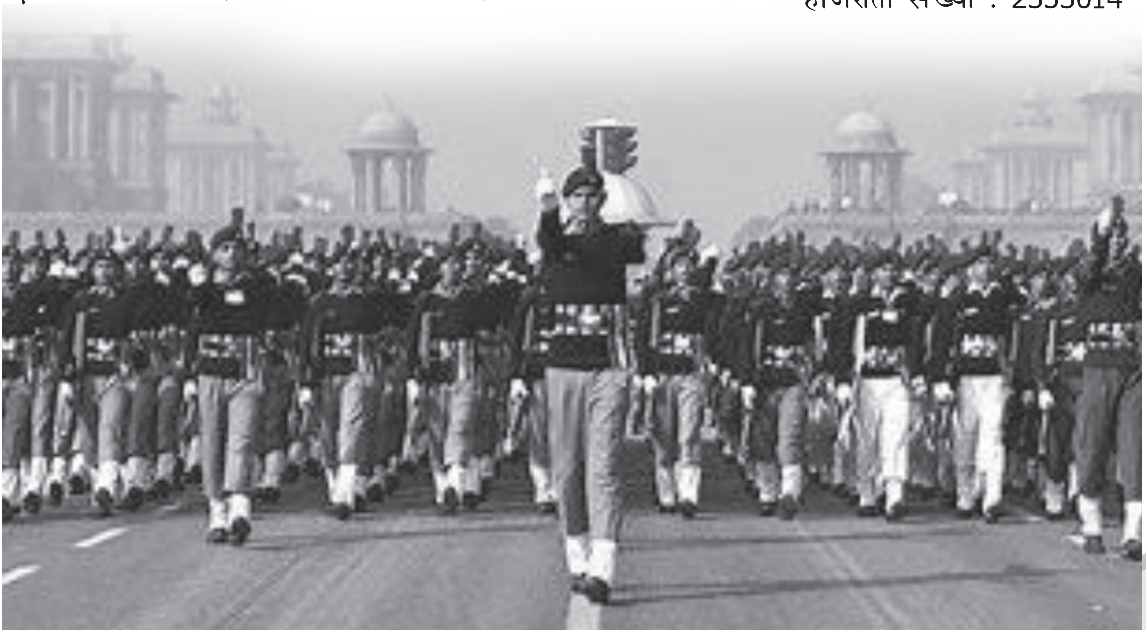

माँ

माँ ही सृष्टि का अस्तित्व है,
माँ ही धरती की पहचान है।
माँ ही रब है,
और माँ ही सब है।

माँ का प्यार अनमोल है,
इसका नहीं कोई मोल है।
ये दुनिया बहुत गोल है,
पर मीठे माँ के बोल है।

माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है।

खुशियों का माँ तू बाग है,
माँ ही जीवन का राग है।
माँ के साथ जिंदगी आसान है,
नहीं तो सब परेशान है।

गौतमी के.
बी.एस्सी प्रथम
हाजराती संख्या : 24126209

ग्राफिक डिजाइनिंग

ग्राफिक डिजाइनिंग एक बहुत ही व्यापक और रोचक फील्ड है। इसमें आप अपनी कल्पना और रचनात्मकता को व्यक्त कर सकते हैं। इसमें आप विभिन्न प्रकार के डिजाइन्स बना सकते हैं। जैसे कि लोगो, ब्रोशर, पोस्टर और वेबसाइट्स के लिए ग्राफिक्स आदि। ग्राफिक डिजाइनिंग में कई सॉफ्टवेयर्स का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि:

– एडोब फोटोशॉप : यह एक प्रोफेशनल ग्राफिक डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर है, जो आपको अपने डिजाइन्स को बनाने और एडिट करने की अनुमति देता है।

– एडोब इलस्ट्रेटर : यह एक वेक्टर ग्राफि–क डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर है, जो आपको अपने डिजाइन्स को बनाने और एडिट करने की अनुमति देता है।

– कैनवा : यह एक ग्राफिक डिजाइनिंग प्लेटफ़ॉर्म है, जो आपको अपने डिजाइन्स को बनाने और एडिट करने की अनुमति देता है और इसमें कई प्री–मेड टेम्पलेट्स और डिज़ाइन एलिमेंट्स शामिल हैं।

– फिगमा : यह एक क्लाउड–आधारित ग्राफिक डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर है, जो आपको अपने डिजाइन्स को बनाने और एडिट करने की अनुमति देता है और इसमें कई कोलाबोरेशन टूल्स शामिल हैं।

– इनडिज़ाइन : यह एक पेज डिज़ाइन और लेआउट सॉफ्टवेयर है, जो आपको अपने डिजाइन्स को बनाने और एडिट करने की अनुमति देता है।

रीतन डिसोजा
बीसीए द्वितीय
हाजराती संख्या : 2353056

भारत में बास्केटबॉल खेल की वर्तमान स्थिति

भारत में बास्केटबॉल खेल की स्थिति पिछले कुछ वर्षों में काफी बदल गई है। हालांकि यह खेल अभी भी क्रिकेट, फुटबॉल और हॉकी जैसे लोकप्रिय खेलों की तुलना में पीछे है, लेकिन इसकी लोकप्रियता धीरे–धीरे बढ़ रही है। बास्केटबॉल ने भारत में अपनी एक अलग पहचान बनानी शुरू कर दी है, खासकर युवाओं और स्कूल–कॉलेज स्तर पर। यह लेख भारत में बास्केटबॉल की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

भारत में बास्केटबॉल की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि यह खेल तेजी, टीम वर्क और रणनीति पर आधारित है। युवाओं को यह खेल आकर्षक लगता है क्योंकि इसमें शारीरिक फिटनेस और मानसिक सतर्कता दोनों की आवश्यकता होती है। स्कूल और कॉलेज स्तर पर बास्केटबॉल टूर्नामेंट्स का आयोजन बढ़ रहा है, जिससे युवाओं को इस खेल में भाग लेने का अवसर मिल रहा है। इसके अलावा, भारतीय बास्केटबॉल फेडरेशन (बीबीएफआई) और अन्य संगठनों ने इस खेल को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है, जिससे खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल रहा है।

भारत में बास्केटबॉल के विकास के रास्ते में कई चुनौतियाँ हैं। पहली और सबसे बड़ी चुनौती इस खेल को पर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढाँचे की कमी है। अधिकांश स्कूलों और कॉलेजों में बास्केटबॉल कोर्ट और उचित प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। क्रिकेट और फुटबॉल की तुलना में बास्केटबॉल को कम प्रचार और वित्तीय सहायता मिलती है, जिसके कारण यह खेल मुख्यधारा में नहीं आ पा रहा है। एक और चुनौती खिलाड़ियों को मिलने वाला समर्थन है। भारत में बास्केटबॉल खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और संसाधन नहीं मिलते हैं।

भारत में बास्केटबॉल के भविष्य में काफी संभावनाएँ हैं। युवाओं में इस खेल के प्रति बढ़ती रुचि और सरकारी तथा निजी संगठनों की पहल से इस खेल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है।

एनबीए (नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भारत में बास्केटबॉल को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए हैं। एनबीए अकादमी और युवा प्रतियोगिताओं का आयोजन भारतीय खिलाड़ियों के लिए एक बड़ा अवसर साबित हो सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बास्केटबॉल की लोकप्रियता बढ़ रही है। युवाओं को इस खेल से जोड़ने के लिए ऑनलाइन कैंपेन और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

भारत में बास्केटबॉल खेल की वर्तमान स्थिति में सुधार हो रहा है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। यदि सरकार, खेल संगठन और निजी क्षेत्र मिलकर इस खेल को बढ़ावा दें, तो भारत बास्केटबॉल के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन सकता है। युवाओं की बढ़ती रुचि और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से भारत में बास्केटबॉल का भविष्य उज्ज्वल है।

जोशल लियोन डिसोजा
बीसीए द्वितीय
हाजराती संख्या : 2353040

एक छात्र के जीवन में वित्त का महत्व

वित्त एक छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उनकी शिक्षा, जीवनशैली और भविष्य की स्थिरता को प्रभावित करता है। चाहे पॉकेट मनी का प्रबंधन करना हो, खर्चों का बजट बनाना हो, या उच्च अध्ययन की योजना बनाना हो, छात्रों के लिए सोच–समझकर निर्णय लेने और पैसे की जिम्मेदार आदतें विकसित करने के लिए वित्तीय साक्षरता आवश्यक है।

वित्तीय जागरूकता के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक वित्तीय स्वतंत्रता और जिम्मेदारी विकसित करना है। अपने भत्ते, छात्रवृत्ति या अंशकालिक कमाई को बुद्धिमानी से प्रबंधित करके, छात्र जरूरतों और चाहतों के बीच अंतर करना सीखते हैं। यह अनावश्यक खर्च को रोकता है और जिम्मेदार वित्तीय व्यवहार विकसित करता है, जिससे उन्हें कम उम्र में आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती है।

बजट बनाना एक और आवश्यक कौशल है जो छात्रों को अपने संसाधनों को प्रभावी ढंग से आवंटित करना सुनिश्चित करता है। एक

सुनियोजित बजट उन्हें बिना अधिक खर्च किए शैक्षणिक खर्चों, व्यक्तिगत जरूरतों और अवकाश गतिविधियों को पूरा करने में मदद करता है। यह उन्हें अप्रत्याशित खर्चों और आपात स्थितियों के लिए भी तैयार करता है, उन्हें सीमित वित्तीय संसाधनों का बुद्धिमानी से प्रबंधन करना सिखाता है।

कई छात्र शिक्षा ऋण लेते हैं या क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं, जिसे अगर ठीक से प्रबंधित नहीं किया गया तो वित्तीय तनाव हो सकता है। ब्याज दरों, पुनर्भुगतान योजनाओं और ऋण के परिणामों के बारे में सीखने से उन्हें उधार लेने के निर्णय लेने में मदद मिलती है। अनावश्यक ऋणों से बचने और अधिक खर्च को नियंत्रित करने से भविष्य में वित्तीय बोझ को रोका जा सकता है, स्थिरता और मन की शांति सुनिश्चित की जा सकती है।

उच्च शिक्षा महंगी हो सकती है, और शीघ्र वित्तीय योजना बनाना आवश्यक है। जो छात्र जल्दी बचत करना शुरू कर देते हैं और छात्रवृत्ति के अवसर, निवेश योजना और अंशकालिक नौकरी के विकल्प तलाशते हैं, उन्हें आगे की पढ़ाई करते समय वित्तीय लाभ होता है। वित्तीय साक्षरता उन्हें योजना बनाने में सक्षम बनाती है, जिससे ऋण और बाहरी वित्तीय सहायता पर उनकी निर्भरता कम हो जाती है।

दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा के लिए स्मार्ट खर्च और बचत की आदतें विकसित करना महत्वपूर्ण है। यहाँ तक कि नियमित रूप से छोटी रकम बचाने से भी छात्रों को आपात स्थिति और भविष्य के खर्चों के लिए वित्तीय सहायता बनाने में मदद मिल सकती है। बचत खाते, निवेश और आपातकालीन निधि जैसी अवधारणाओं को समझने से यह सुनिश्चित होता है कि छात्र अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयार रहते हैं, जिससे वित्तीय तनाव कम होता है।

उद्यमिता या फ्रीलांसिंग में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए वित्तीय ज्ञान अपरिहार्य है। निवेश रणनीतियों, व्यावसायिक खर्चों और आय प्रबंधन को समझने से उन्हें छोटे उद्यम शुरू करने और पैसे संभालने में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलती है। यह ज्ञान उन्हें अपने करियर और व्यवसाय को सफलतापूर्वक विकसित करने के कौशल से सुसज्जित करता है।

वित्त एक आजीवन कौशल है जो जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है, बिलों का भुगतान करने से लेकर निवेश करने और सेवानिवृत्ति सुरक्षित करने तक। वित्तीय प्रबंधन जल्दी सीखना यह सुनिश्चित करता है कि छात्र वित्तीय आत्मविश्वास और सुरक्षा के साथ वयस्कता में आसानी से प्रवेश कर सकें। वित्त को जल्दी समझकर, छात्र अपने करियर के लिए एक मजबूत नींव बना सकते हैं, वित्तीय नुकसान से बच सकते हैं और आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

त्रिशा सुवर्णा
बीबीए द्वितीय
हाजराती संख्या : 2341044

प्रकृति की अनंत सुंदरता

प्रकृति की सुंदरता अनंत है,
हरियाली की चादर ओढ़ी, खूबसूरती का समंत है।

फूलों की खुशबू, पक्षियों की चहचहाहट,
प्रकृति की सुंदरता को और भी बढ़ाती है।

नदियों का कल–कल, पहाड़ों की विशालता,
प्रकृति की सुंदरता का एक अनोखा संगम है।

चाँदनी रात, सूरज की किरणें,
प्रकृति की सुंदरता को और भी निखारती हैं।

प्रकृति की सुंदरता हमें आकर्षित करती है,
हमें जीवन की सच्ची खूबसूरती का एहसास कराती है।

सियोना एस.
बी.ए. प्रथम
हाजराती संख्या : 24110612

जियो जिंदगी

कभी जिंदगी होती है मुश्किल।
कभी होती है यह आसान॥
कुछ लोगों का होता लाभ।
कुछ का हो जाता नुक्सान॥

जिंदगी आसान नहीं होती।
उसमें उतार चढ़ाव भी होते हैं॥
पीछे ही छूट जाते वो।
जो घोड़े बेचकर सोते हैं॥

जिंदगी एक खेल है।
समझ गए तो है आसान॥
सोच समझ कर जीयोगे।
तब बनोगे एक सफल इंसान॥

जो भी दिमाग का उपयोग कर।
जिंदगी का खेल समझ जाते हैं॥
वो लोग सबको पीछे छोड।
विजय हासिल कर पाते हैं॥

मेलनी सल्डाना
बी.एस्सी प्रथम
हाजराती संख्या : 24125412

प्रेरणा–२०२४

सहयोगकर्ता

Kasharp Gym Fitness

WiZdom Educational Consultant

हिंदी संघ की गतिविधियाँ